ISSN No. : 2394-0344 REMARKING : VOL-1 * ISSUE-7*December-2014

# आधुनिक डिजाईन में विज्ञापन कला व जनजातीय कला का क्रमिक विकास व अध्ययन

**सोम्बुरु सोवरा**
रीडर,
कला विभाग,
उत्कल यूनिवर्सिटी कल्चर,
भुवनेश्वर,उड़ीसा

**सारांश**

इस अध्ययन में हम पहले के विज्ञापन से लेकर आज तक के विज्ञापनों में जनजातीय व लोक कला का प्रयोग व उसके क्रमिक विकास पर एक नजर डालेंगे और साथ में प्रस्तुत उदाहरणों द्वारा इसका अध्ययन करने का प्रयास करेंगे।

**मुख्य शब्द :** भारतीय संस्कृति, कला, समाचार पत्र,

**प्रस्तावना**

जनजातीय कला भारतीय संस्कृति की विशिष्टता है। यहाँ की जीवन शैली सांस्कृतिक रूप से अत्यधिक समृद्ध है। मानव जीवन के आरम्भ से अन्त तक जुड़ी इस जनजातीय कला और संस्कृति में एक लय है। भारत जैसे देशों की जनजातीय संस्कृति में इतनी अधिक जीवन्तता है कि उसमें नये तत्वों को आत्मसात् करने की क्षमता भी विद्यमान है। जिसके फलस्वरूप यहाँ के जनजातीय कलाकारों की कला में प्रयोगों की प्रक्रिया भी दृष्टिगोचर होती है। आवश्यकता एवं रुचि के अनुरूप भिन्न प्रयोग धीमी गति से ही सही जनजातीय कला में अपना स्थान बनाते जा रहे हैं।

समय के साथ – साथ सभी चीजें बदलती हैं । कुछ वस्तुएँ विकास की ओर अग्रसर होती हैं तो कुछ विकास के प्रयास में लगी रहती हैं। विज्ञापन की दुनिया में दिन–प्रतिदिन नए–नए माध्यम ढूढ़ने व इनको प्रस्तुत करने के नित्य नए तरीके ढूढ़ने का प्रयास होता रहता है। इसी प्रकार से विज्ञापन की दुनिया में बहुत समय से जनजातीय कला का प्रयोग नए–नए ढंग से होता रहा है। हमेशा इनके साथ नए–नए प्रयोग किए जाते रहे हैं और काफी हद तक ये सफल भी रहे हैं। इनका प्रयोग समाचार पत्र के विज्ञापन पत्रिकाओं में प्रकाशित विज्ञापन, बुक कवर, फोल्डर, कैलेन्डर, पोस्टर आदि में सफलतापूर्वक हुआ है।

**समाचार पत्र में प्रकाशित विज्ञापन**

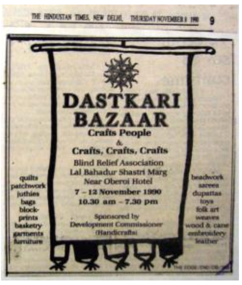

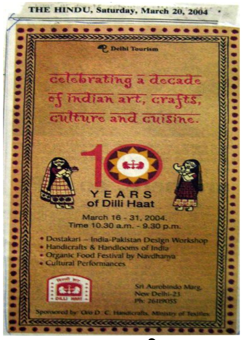


**हिन्दुस्तान टाइम्स समाचार पत्र – 1990 दस्तकारी बाजार**

चित्र संख्या (i) यह विज्ञापन हिन्दुस्तान नामक समाचार पत्र में 1990 में प्रकाशित हुआ था जो कि एक 'दस्तकारी बाजार' का विज्ञापन है। उसका रंग श्याम–श्वेत है । यह विज्ञापन बहुत ही साधारण है। इसमें जनजातीय कला के तत्वों का समावेश बहुत ही चतुराई से किया हुआ देखा जा सकता है।

**टाइम्स ऑफ इन्डीया-2001, प्रदर्शनी से संबंधित विज्ञापन**

चित्र संख्या (ii) यह विज्ञापन 2001 में टाइम्स ऑफ इण्डिया नामक समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ था जो की एक प्रदर्शनी से सम्बन्धित है। इस विज्ञापन में भी हम आसानी से देख सकते हैं कि किस प्रकार जनजातीय कला के एक नमूने को साधारण तरीके से प्रयोग करके विज्ञापन को सुन्दर बनाया गया है।

**हिन्दुस्तान समाचार पत्र–2005,'छत्तीसगढ़ राज्य दिवस'**

चित्र संख्या (iii) यह विज्ञापन हिन्दुस्तान समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ था जिसको 'छत्तीसगढ़ राज्य दिवस 2005' के उपलक्ष्य में प्रकाशित किया गया था। छत्तीसगढ़ राज्य मुख्यतः जनजातीय लोगों से सम्बन्धित है तथा इसको दिखाने के लिए उन्होंने उस राज्य की जनजातीय कला के कुछ नमूने इस विज्ञापन में प्रयोग किए हैं।

**हिन्दू समाचार पत्र - 2004, 'दिल्ली हाट एक प्रदर्शनी'**

चित्र संख्या (iv) यह विज्ञापन दिल्ली हाट एक प्रदर्शनी का स्थान है जहाँ पर भिन्न – भिन्न क्षेत्रों की लोक कला व जनजातीय कलाकृतियों व वस्तुओं को प्रदर्शनी में बेचा जाता है। 2004 में जब इसके 10 साल पूरे हुए तब इस उपलक्ष्य में एक विज्ञापन प्रकाशित किया गया। इस विज्ञापन में भी हमें ध्यान से देखने पर कई जनजातीय कलाओं का प्रयोग दिखाई देता है।

**मैग्जीन के अन्दर प्रकाशित विज्ञापन**

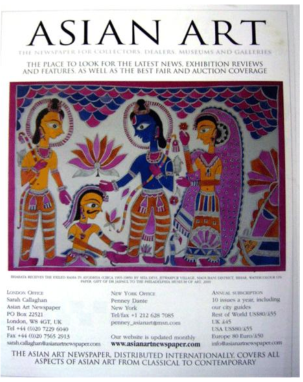


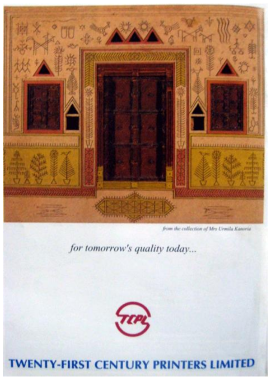


**(i)**

**एशियन आर्ट**

चित्र संख्या (i) यह विज्ञापन एक मैग्जीन के अन्दर प्रकाशित विज्ञापन है जो कि एशियन आर्ट से सबन्धित है तथा इस विज्ञापन में भारतीयता को दिखाने के लिए मधुबनी लोक कला व जनजातीय कला का प्रयोग किया गया है।**'टि सी पी एल'**

चित्र संख्या (ii) यह विज्ञापन एक ' टि सी पी एल' प्राइवेट कम्पनी का है तथा इन्होंने भी जनजातीय कला का प्रयोग अपने इस विज्ञापन में किया है। ये चित्र एक घर के ऊपर ठीक वैसे ही बने हुऐ हैं जैसे की गाँवों में आदिवासी अपने घर पर बनाते हैं।

**'इण्डिया साँग्स स्पान्सर्ड बाइ टोकियो मेट्रोपोलीशन कल्चर फाउन्डेशन'**

चित्र संख्या (iii) यह विज्ञापन एक प्रदर्शनी का है। इस विज्ञापन में 'वरली' जनजातीय कला के कुछ चित्रों को विज्ञापन के ऊपरी भाग में छापा गया है जिससे कि उसका भारतीय कला से सम्बन्ध का पता चलता है।

**मैग्जीन कवर**

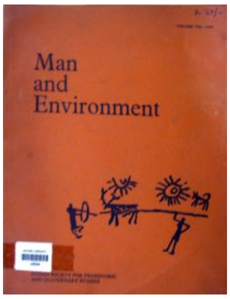

**मेन एण्ड इनवारमेन्ट 1984**

चित्र संख्या (i) इस मैग्जीन के कवर पर जो चित्र छापा गया है वह आदि मानव के चित्रों के बहुत निकट लग रहा है तथा ये जनजातीय चित्र भी इस मैग्जीन के नाम के साथ बहुत ही सहज ढंग से जा रहा है।

**मार्ग 2001.**

चित्र संख्या (ii) 'मार्ग' भारतीय संस्कृति सम्बन्धि प्रत्रिका है। इस मैग्जीन के कवर के ऊपर भी जो चित्र प्रयोग किया गया है वह मध्यप्रदेश की गोण्ड जनजातीय कला का है। इस मैग्जीन के ऊपर इस चित्र को एक डिजाइन के रूप में प्रयोग किया गया है।

**चौमासा 1996.**

चित्र संख्या (iii) यह पत्रिका मध्यप्रदेश जनजातीय कला से सम्बन्धित है। इसीलिए इस के आवरण पर मध्यप्रदेश की जनजातीय कला गोण्ड चित्रकला को छाप कर इस क्षेत्र से सम्बन्ध व आदिवासियों की तरफ सकेत करने का प्रयास किया गया है।

**बुक कवर**

**आदिवासी मुखीक शितया परम्परा** 2007

चित्र संख्या (i) यह पत्रिका मध्यप्रदेश जनजातीय कला से सम्बन्धित है। इसीलिए इस के आवरण पर मध्यप्रदेश की जनजातीय कला गोण्ड चित्रकला को छाप कर इस क्षेत्र से सम्बन्ध व आदिवासियों की तरफ सकेत करने का प्रयास किया गया है।

**फोल्कटेल फ्राम इंडिया** 1993

चित्र संख्या (ii) यह पुस्तक भारतीय जनजातीय कला की कहानियों से सम्बन्धित है, जो कि पेंग्विन नामक प्रकाशन कम्पनी द्वारा प्रकाशित है। भारतीय लोक कहानियाँ होने की वजह से इस पुस्तक के कवर पर भी गुजरात क्षेत्र की पिथौरा जनजातीय कला का प्रयोग किया गया है।

**कठानी 2006**

चित्र संख्या (iii) कहनी का सम्बन्ध भी कहानी से होता है तथा इस पुस्तक में उड़ीसा क्षेत्र की छोटी–छोटी कहानियों का संग्रह है। चूंकि यह पुस्तक उड़ीसा क्षेत्र से सम्बन्धित है इसलिये इसमें उड़ीसा जनजातीय 'सोउरा कला' का प्रयोग किया गया है।

**फोल्डर**

(i)

(ii)

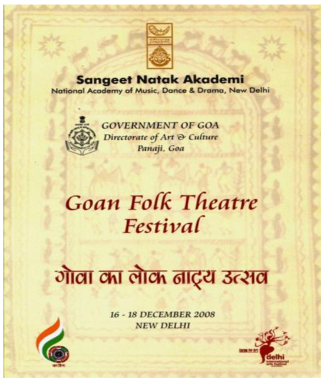

(iii)

**घोषणा पत्र**

चित्र संख्या (ii) यह फोल्डर प्राकृतिक संसाधन और उपजीविका के साधनों से जुड़ा रोजगार अधिकार आदिवासी महिला परिषद 2004 से सम्बन्धित है। इसका सम्बन्ध आदिवासी महिलाओं से होने के कारण इस फोल्डर में उनकी कला का प्रयोग सांकेतिक रूप में किया गया है जो कि सार्थक भी है।

**महिला सम्मेलन**

चित्र संख्या (ii) यह नैसर्गिक संसाधन हक्कम आदिवासी महिला सम्मेलन 2002 का फोल्डर है। इस फोल्डर का सम्बन्ध सीधे–सीधे जनजातीय लोगों से है। इस कारण इसके ऊपर भी, जनजातीय कला के अंशों का प्रयोग किया गया है।

**गोआन फोक थियेटर फेस्टिवल**

चित्र संख्या (iii) यह फोल्डर संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रकाशित किया गया था। इस फोल्डर के ऊपर भी बहुत ही हल्के रंगों में जनजातीय कला का प्रयोग किया गया है जिसकी वजह से फोल्डर बहुत ही रोचक व आकर्षक लग रहा है।

**कैटलॉग**

(i)


(ii) 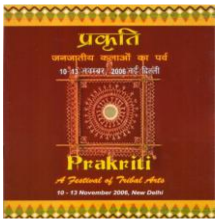


**नेशनल अवार्ड फॉर मास्टर क्राफ्टस् मेन 1980**

चित्र संख्या (i) 1980 में मास्टर क्राफ्ट्समेन को नेशनल अवार्ड दिए जाने के उपलक्ष्य में ये कैटलॉग प्रकाशित किया गया था। इसके ऊपरी भाग में बिहार की मधुबनी कला के एक चित्र के भाग को छापा गया है। इससे ये पता चल जाता है की ये केटलॉग जनजातीय कला समारोह से सम्बन्धित है।

**प्रकृति 2006**

चित्र संख्या (ii) यह कैटलॉग जनजातीय कलाओं के पर्व से सम्बन्धित है । इसका सम्बन्ध भी जनजातीय लोगों से होने की वजह से इसके ऊपर भी जनजातीय कला का प्रयोग किया गया है।

**पेंपलेट्स**

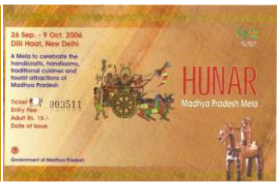


**फिर चलें सूरज कुण्ड 2009**

चित्र संख्या (i) यह पेम्पलेट 'सूरज कुण्ड मेले' का है। इस मेले का सम्बन्ध भारतीय कला व संस्कृति से होता है तथा इस मेले में अलग–अलग क्षेत्रों से लोक कलाकर भी आते हैं इसीलिए इस मेले के पेम्पलेट्स के ऊपर बस्तर की ठोकरा शिल्प कला के कुछ नमूने प्रकाशित किए गए हैं।

**हुनर 2006**

चित्र संख्या (ii) इस पेम्पलेट्स को दिल्ली हाट में होने वाले मध्यप्रदेश मेले के उपलक्ष्य में छापा गया था। इसीलिए इस क्षेत्र की 'गोण्ड' कला का अंश इस पेम्पलेट के ऊपर छापा गया है जो कि इस मेले के सम्बन्ध को जनजातीय लोगों के साथ दर्शाता है ।

**पोस्टर**

**आदिवासी हस्त शिल्प प्रर्दशिनी 2009**

(i)

ISSN No. : 2394-0344 REMARKING : VOL-1 * ISSUE-7*December-2014

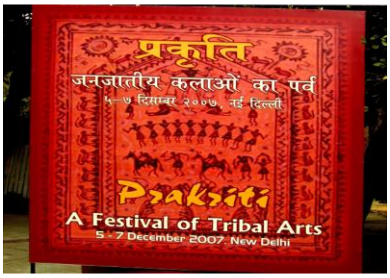

(ii)

**आदिवासी हस्त शिल्प प्रर्दशिनी 2009**

चित्र संख्या (i) यह पोस्टर एक आदिवासी हस्त शिल्प प्रदर्शनी से सम्बन्धित है। इस पोस्टर में उड़ीसा की सोउरा जनजातीय कला का प्रयोग किया गया है। टाटा स्टील व इफको जैसी बड़ी– बड़ी कम्पनियों ने इस पोस्टर व प्रदर्शनी को स्पोन्सर किया हुआ है, तभी उनका नाम पोस्टर में छापा गया है

**'प्रकृति' 2006**

चित्र संख्या (ii) ये पोस्टर 'प्रकृति' नामक एक जनजातीय कलाओं की प्रदर्शनी व पर्व के उपलक्षय में बनाया गया है तथा इस पर्व का विज्ञापन करने हेतु इस पोस्टर का प्रयोग किया जा रहा है। यह पर्व भी जनजातीय लोगों की कला से सम्बन्धित होने के कारण इस पोस्टर के ऊपर एक जनजातीय चित्र कला का प्रयोग किया गया है। इससे साफ–साफ पता चल जाता है कि यह जनजातीय कला से सम्बन्धित है।

**कैलेन्डर**

**कैलेन्डर, 1993**

यह केलेण्डर 1993 में छापा गया था जिसमें हर एक महीने के पृष्ठ पर अलग–अलग जनजातीय कलाओं का प्रयोग किया गया था जैसे– अप्रैल : बस्तर की ढोकरा शिल्प कला तो मई माह में गुजरात की पिथौरा चित्र कला। इस प्रकार आजकल कई बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ अपने कैलेण्डरों में जनजातीय कला व शिल्पों का प्रयोग बहुत ही बड़ी मात्रा में बड़े ही रचनात्मक ढंग से कर रही हैं जिससे इनके कैलेण्डर भी बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं

**पैकेजिंग**

(i)

चित्र संख्या (i) आज कल पैकेजिंग में भी जनजातीय कला का प्रयोग बहुत हो रहा है। हाल ही में वर्ष 2008 में हुए ट्रेड फेयर में नागालैंड के स्टॅाल में पैकिजिंग के कई उदाहरण थे जिन के ऊपर जनजातीय कला के नमूनों को छापा गया था। उदाहरण के लिए चित्र संख्या को देख सकते हैं।

(ii)

(iii)

**सूरज कुंड मेला**

आउट डोर मिडिया के विज्ञापनों में भी बड़े ही रचनात्मक ढंग से जनजातीय कलाओं का प्रयोग देखा जा सकता है। आउ डोर मीडिया के विज्ञापनों में मुख्यतः हम क्योस्क, पोस्टर, होर्डिंग व बैनर आदि देख सकते हैं। ये विज्ञापन "सूरज कुंड मेले" के उपलक्ष मे छापा गया था तथा सूरज कुंड मेले की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए इस विज्ञापन का प्रयोग किया गया था। इस मेले में बड़ी भारी मात्रा में जनजातीय कला को प्रदर्शित किया जाता है। इस विज्ञापन के होर्डिंग व क्योस पर जो चित्र प्रयोग किय गये हैं वो बस्तर की ठोकरा शिल्प कला से सम्बन्धित हैं।

**गोआन फोक थियेटर फेस्टीवल**

ठीक इसी प्रकार चित्र संख्या (ii) को भी देखें तो इसके ऊपर भी जनजातीय कला का प्रयोग देखने को मिलता है । ये होर्डिंग गोआन फोक थियेटर फेस्टीवल से सम्बन्धित हैं।

**आदिवासी मेला' 2006**

चित्र संख्या (iii) यह एक आदिवासी मेला 2006, का होर्डिंग है तथा इसमें भी पर्याप्त मात्रा मे जनजातीय कला का प्रयोग किया गया है । इस के भी ऊपरी व निचले भाग में एक बॉर्डर के जैसे जनजातीय कला का प्रयोग में किया गया है।

इस प्रकार उपरोक्त उदाहरणों में जैसे पत्र – पत्रिकाओं में प्रकाशित विज्ञापन इनके कवर, पोस्टर, फोल्डर, होर्डिंग आदि का अध्ययन हमने एक समय के क्रम के अनुसार किया और पाया की जनजातीय कला व लोक कलाओं का प्रयोग विज्ञापन में बहुत बड़ी मात्रा में किया गया है, बस इनका ढंग अलग–अलग है। किसी विज्ञापन में मुख्यतः केन्द्र में तो किसी मे दांई तरफ तो किसी में एक बॉर्डर के रूप में प्रयोग किया गया है जिससे विज्ञापन बहुत ही आकर्षक लग रहे हैं । जैसा की एक सफल विज्ञापन थोड़े में ही अपनी पूरी कहानी बयान कर देता है ठीक वैसे ही जनजातीय कला के अंश ऐसा ही काम करते हैं। ये विज्ञापन एक सफल विज्ञापन बन गये हैं और आगे भी इनका प्रयोग किया जायेगा ये निश्चित है।

Reference

1. Book: The Tribal Art of Middle India: A Personal Record : Verrier Elwin Published: University Microfilms, 1980
2. Book: Book: Leaves from the Jungle: Life in a Gond Village : Verrier Elwin Published: John Murray, 1936, Original from the University of California
3. Book:The Advertising Association,Hand Book ,Edited : J.J.P. Bullmore and M.J. Waterson Edition: 1983, Published: British Library Cataloging in Publications
4. Book: Advertising, Edited: John S.Wright Willis L.Winter, Jr. Shevilyn,k, zeiglevEdition: Fifth Edition 1981, 1986 Published: Tata MC Graw-Hill publishing company LTD.
5. Book: Advertising (Second Edition) what it is and how to do it Edited : Rodrick white Marketing Director Lansdowne Euro Published: MC Graw-Hill Book company(U.K.) LTD.
6. Book: Advertising Principle and Practice, Edited: William Wells John Buronett Sandra Moriarty Edition: (Third Edition) 1995, Published : MC Graw-Hill Book company (U.K.) LTD. Printed: United States of America.
7. Book: Communication and the art Ajanta series on a esthetics - 5 Edited : Rekh Jhanje, Edition : 1984, Published: Ajanta Publication .
8. Book: Contemporary Advertising Edited : Courtland L Bovee/William, Edition :1982,Published: F. Arans Library of cata by Card no 81-84890, United States of America.
9. Book: Advertising Theory and Practice Edited: Richard D. Irwin Inc, Homeward, Illinois 60430, Irwin Dorsey Limited George Towns on trio l7g4bc3, Edition: Tenth Edition 1979.
10. पुस्तक : भारतीय जनजातियाँ : संरचना एवं विकास लेखक : डॉ. हरिचन्द्र उप्रेति संस्करण : 2000,2002 प्रकाशक : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर मुद्रक : कोटावाला प्रिंटर्स, जयपुर
11. पुस्तक : इलैक्ट्रॉनिक संचार प्रबन्धन, लेखक : डॉ. सुधीर सोनी, संस्करण : 2007 प्रकाशक :राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटर्स, जयपुर
12. पुस्तक :विज्ञापन कला,लेखक : एकेश्वर प्रसाद हतवाल,संस्करण : 2008,प्रकाशक :राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, मुद्रक : हरिहर प्रिंटर्स, जयपुर।